B.A. PART - 1
हिन्दी (प्रतिष्ठा) प्रथम-पत्र
हिन्दी साहित्य का इतिहास

प्रश्न :- विद्यापति पर एक संक्षिप्त नोट लिखें।

उत्तर :- मैथिल-कोकिल विद्यापति ने संस्कृत, अवहट्ट और मैथिली भाषा में अपनी रचनाएँ लिखी हैं। ये तिरहुत के महाराज शिवसिंह के दरबारी कवि थे। संस्कृत में लिखी उनकी 11 रचनायें उपलब्ध होती हैं, जिनमें प्रमुख हैं — शैव सर्वस्वसार, पुरुष परीक्षा, दुर्गाभक्ति, तरंगिणी, गंगा वाक्यावली आदि। इसके अतिरिक्त इन्होंने अवहट्ट (अपभ्रंश) में कीर्तिलता और कीर्तिपताका नामक दो पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें अपने आश्रयदाता राजाओं शिवसिंह, कीर्तिसिंह की वीरता का वर्णन औजस्वी ढंग से किया है।

विद्यापति की अक्षय कीर्ति का आधार मैथिली भाषा में रचित 'पदावली' है। इस रचना में इन्होंने राधा-कृष्ण को आधार बनाकर शृंगार के अत्यंत मादक एवं मनोरम चित्र अंकित किये हैं। अपनी कोमलकांत मधुर पदावली तथा संगीतात्मकता के कारण विद्यापति को 'अभिनव जयदेव' एवं 'मैथिल कोकिल' की उपाधि से विभूषित किया गया है। जयदेव के गीत-गोविन्द में जो माधुर्य है, वही विद्यापति पदावली में भी देखा जा सकता है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने यद्यपि विद्यापति का रचनाकाल संवत् 1460 विक्रमी बताया है, तथापि उन्हें उस वीरगाथा काल में स्थान दिया है, जिसकी अंतिम सीमा 1375 विक्रमी में समाप्त हो जाती है। इस असंगति का कोई कारण भी उन्होंने स्पष्ट नहीं किया है। संभव है अपभ्रंश की रचनाएँ लिखने के कारण शुक्ल जी ने उन्हें आदिकाल के अन्य कवियों के साथ रख दिया है, क्यों कि आदिकालीन धार्मिक साहित्य की भाषा हिन्दी के उतने निकट नहीं है जितनी अपभ्रंश के निकट है।

विद्यापति की पदावली की विषय-वस्तु प्रमुख

रूप से शृंगार ही है। शृंगार के दोनों पक्षों संयोग और वियोग का निरूपण उसमें किया गया है, किन्तु संयोग पक्ष की प्रधानता रही है, वय: संधि, नख-शिख के मनोरम चित्र पदावली में अंकित किए गए हैं। विद्यापति शैव मतावलम्बी थे। साथ ही उनकी कविताओं में गंगा, देवी, शिव आदि अनेक देवी-देवताओं की स्तुतियाँ भी हैं, जिनके कारण विद्वानों का एक वर्ग उन्हें शृंगार कवि न मानकर भक्त कवि मानता है, किन्तु आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने विद्यापति को शृंगारी कवि मानते हुए इस मत का खण्डन किया है कि विद्यापति भक्त कवि थे। उनके अनुसार — "विद्यापति के पद अधिकतर शृंगार के ही हैं जिनमें नायिका और नायक राधा-कृष्ण हैं। आध्यात्मिक रंग के चश्में आजकल बहुत सस्ते हो गए हैं। उन्हें चढ़ाकर जैसे कुछ लोगों ने गीत गोविन्द के पदों को आध्यात्मिक संकेत बताया है, वैसे ही विद्यापति के इन पदों को भी।"

विद्यापति की शृंगारिक रचनाओं में माधुर्य का अद्भुत समावेश हुआ है, पदावली के कुछ नमूने यहाँ उद्धृत हैं —

कामिनि करए सनाने। हेरतहिं हृदय हनए पंचबाने।
चिकुर गरए जलधारा। जनि मुख ससिडर रोअए अँधारा।

अर्थात कामिनी स्नान कर रही है, उसे देखते ही हृदय पर कामदेव के पँच बाणों का प्रहार होता है। केशों से जलधारा टपक रही है, जिसे देखकर ऐसा लगता है मानो नायिका के मुख रूपी चंद्रमा को देखकर और उससे भयभीत होकर अंधकार रो रहा है।

नायिका के रूप-सौन्दर्य की एक झाँकी निम्न पंक्तियों में देखी जा सकती है:—

चांद सार लए मुख घटना करु लोचन चकित चकोरे।
अमिय धोय आँचर धनि पोछल दह दिसि भेल उजोरे॥

अर्थात नायिका के अद्भुत सौन्दर्य का निर्माण विलक्षण ढंग से हुआ है। मानो विधाता ने चन्द्रमा के सार तत्व को लेकर उसमें मुख का निर्माण किया है, नायिका के ~~नेत्र~~ तो (विजाड़ित) चकोर हैं ही। अमृततुल्य लावण्य लिए अपने मुख को धोकर जब उसने आँचल से पोंछा तो उसके प्रकाश से ~~[illegible]~~ दसों ~~[illegible]~~ दिशायें प्रकाशित हो गयीं।

राधा-कृष्ण की प्रेम तन्मयता का चित्र उनके निम्न पद में देखा जा सकता है—

अनुखन माधव माधव सुमिरत सुन्दरि भेलि-~~[illegible]~~मधाई।

विद्यापति का काव्य काव्यत्व के सभी उपादानों से संयुक्त है। उसमें एक ओर तो भाषा का माधुर्य है तो दूसरी ओर अलँकारों की इन्द्रधनुषी छटा विद्यमान है। विद्यापति ने सौन्दर्य-चित्रण के लिए जितनी उपमायें प्रयुक्त की हैं, आगे के हिन्दी कवियों ने प्राय: उन्हें ही ग्रहण किया है। उन्होंने परवर्ती भक्ति साहित्य एवं रीतिकालीन साहित्य को बहुत कुछ परम्परित रूप में दिया है। उनके प्रभाव की गूँज परवर्ती हिन्दी साहित्य में अनेक रूपों में देखी जा सकती है। राधा-कृष्ण का आश्रय लेकर श्रृंगार का जो उन्मुक्त चित्रण हमें रीतिकालीन साहित्य में दिखाई पड़ता है, उसका मूल स्रोत विद्यापति पदावली को ही समझना चाहिए। वे हिन्दी के सशक्त एवं सक्षम कवियों में से एक हैं तथा उनका काव्य आज भी अत्यंत लोकप्रिय है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न — विद्यापति पर एक संक्षिप्त नोट लिखें?

मो० नं० - 7909096087
दिनांक - 28/01/2022

प्रतीन
S/o समदर्शी कुमार
विभाग - हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U. M)